महामृत्युंजयस्तोत्रं (रुद्रं पशुपतिं)

महामृत्युंजयस्तोत्रं (रुद्रं पशुपतिं)

श्रीगणेशाय नमः |
ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयस्तोत्रमंत्रस्य श्री मार्कंडेय ऋषिः,
अनुष्टुप्छंदः, श्रीमृत्युंजयो देवता, गौरी शक्तिः,
मम सर्वारिष्टसमस्तमृत्युशांत्यर्थं सकलैश्वर्यप्राप्त्यर्थं
जपे विनोयोगः |

ध्यानं
चंद्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयांतस्थितं
मुद्रापाशमृगाक्षसत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् |
कोटींदुप्रगलत्सुधाप्लुततमुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कांतं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत् | |

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकंठमुमापतिम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 1 | |

नीलकंठं कालमूर्त्तिं कालज्ञं कालनाशनम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 2 | |

नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयप्रदम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 3 | |

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 4 | |

देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 5 | |

त्र्यक्षं चतुर्भुजं शांतं जटामकुटधारिणम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति | | 6 | |

भस्मोद्धूलितसर्वांगं नागाभरणभूषितम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 7 ||

अनंतमव्ययं शांतं अक्षमालाधरं हरम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 8 ||

आनंदं परमं नित्यं कैवल्यपददायिनम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 9 ||

अर्द्धनारीश्वरं देवं पार्वतीप्राणनायकम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 10 ||

प्रलयस्थितिकर्त्तारमादिकर्त्तारमीश्वरम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 11 ||

व्योमकेशं विरूपाक्षं चंद्रार्द्धकृतशेखरम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 12 ||

गंगाधरं शशिधरं शंकरं शूलपाणिनम् |
(पाठभेदः) गंगाधरं महादेवं सर्वाभरणभूषितम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 13 ||

अनाथः परमानंतं कैवल्यपदगामिनि |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 14 ||

स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यंतकारणम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 15 ||

कल्पायुर्देहि मे पुण्यं यावदायुररोगताम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 16 ||

शिवेशानां महादेवं वामदेवं सदाशिवम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 17 ||

उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्तारमीश्वरं गुरुम् |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 18 ||

फलश्रुति

मार्कंडेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ |
तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचौरभयं क्वचित् || 19 ||

शतावर्त्तं प्रकर्तव्यं संकटे कष्टनाशनम् |
शुचिर्भूत्वा पथेत्स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् || 20 ||

मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम् |
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः || 21 ||

तावकस्त्वद्गतः प्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड |
इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकाख्यमनुं जपेत् || 23 ||

नमः शिवाय सांबाय हरये परमात्मने |
प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः || 24 ||

शतांगायुर्मंत्रः |
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रैं ह्रः
हन हन दह दह पच पच गृहाण गृहाण
मारय मारय मर्दय मर्दय महामहाभैरव भैरवरूपेण
धुनय धुनय कंपय कंपय विघ्नय विघ्नय विश्वेश्वर
क्षोभय क्षोभय कटुकटु मोहय मोहय हुं फट्
स्वाहा इति मंत्रमात्रेण समाभीष्टो भवति ||

|| **इति श्रीमार्कंडेयपुराणे मार्कंडेयकृत महामृत्युंजयस्तोत्रं संपूर्णम्** ||